CBSE Test Paper 03

Ch-9 सूर्यकांत त्रिपाठी निराला

1. **निम्नलिखित काव्यांशों को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए-**

   कहीं साँस लेते हो,
   घर-घर भर देते हो,
   उड़ने को नभ में तुम
   पर-पर कर देते हो,
   आँख हटाता हूँ तो
   हट नहीं रही है।
   पत्तों से लदी डाल
   कहीं हरी, कहीं लाल,
   कहीं पड़ी है उर में
   मंद-गंध-पुष्प-माल
   पाट-पाट शोभा-श्री
   पट नहीं रही है।

   i. "पाट-पाट शोभा-श्री पट नहीं रही है' में निहित काव्यगत विशेषता बताइए।
   ii. काव्यांश में किस ऋतु का वर्णन है तथा उसकी क्या-क्या विशेषताएँ कविता में अंकित हुई हैं?
   iii. कवि की आँख हटाने पर भी क्यों नहीं हट रही है? उन्हें कौन-कौन-सी चीजें आकर्षित कर रही हैं?

2. अट नहीं रही है कविता का मूल भाव स्पष्ट करें ?

3. फाल्गुन मास को कवि ने किस रूप मे देखा है ?

4. कवि के अनुसार धरती पर बादलों का आगमन क्यों होता है?

5. 'अट नहीं रही है' कविता में कवि क्या संदेश देना चाहता है?

6. कवि बादलों से बरसने का अनुरोध क्यों करता है ?

CBSE Test Paper 03
Ch-9 सूर्यकांत त्रिपाठी निराला

Answer

1. i. काव्यांश में निहित काव्यगत विशेषता है कि यहाँ अनुप्रास अलंकार है,अनुकरणनात्मकता तथा नाद सौन्दर्य व्यंजित है | फागुन का मानवीकरण करने के कारण मानवीकरण अलंकार है |
   ii. काव्यांश में बसंत ऋतु का वर्णन है। इस ऋतु में चारों ओर हरियाली फैली हुई है। पेड़ों की डालियाँ फूल-पत्तों से लदी हुई हैं और सुंगंधित पवन के चलने से सम्पूर्ण वातावरण सुगंधित हो रहा है।
   iii. प्रकृति की शोभा को देखकर कवि को असीम आनंद की अनुभूति हो रही है, जिसके कारण उसकी आँख प्राकृतिक शोभा से हटाने से भी नहीं हट रही है। उन्हें हरे व लाल पत्तों से लदी वृक्षों की शाखाएं, फूलों से लदी डालियाँ, सुगंधित वातावरण आकर्षित कर रहा है।

2. 'अट नही रही है कविता में प्रकृति में चारों ओर सुंदरता व्याप्त है। कविता के मूल भाव के अनुसार फाल्गुन की सुंदरता घर-मन और तन में समाये नहीं समाती है। वृक्ष लाल और हरे रंग से ढके हुए है | आकाश विभिन पक्षियों से अटा पड़ा है | घर-घर में सुगंधित वायु व्याप्त है। चारों ओर सिर्फ सुंदरता ही सुंदरता है जो मानव मन को आह्लादित कर रही है और कही नहीं समा रही है ।

3. फाल्गुन मास को कवि ने मानव के रूप में देखते हुए उसका मानवीकरण किया है | उन्होंने प्राकृतिक सौन्दर्य की उस चरम सीमा को देखा है जहाँ सिर्फ सौन्दर्य बिखरा हुआ है | सम्पूर्ण धरती सुंदर फूलों-पत्तों से और आकाश पक्षियों से अटा हुआ है। कवि चाह कर भी अपनी नज़र हटा नहीं पा रहा है |

4. जब भीषण गर्मी के कारण धरती पर लोग त्रस्त होते हैं ओर चारों ओर त्राहि-त्राहि मच रही होती है | लोग पानी के लिए के लिए तरस रहे होते हैं | जब वे व्याकुल और अनमने होते हैं तब उन्हें शीतलता और सुख प्रदान करने के लिए बादलों का आगमन होता है | बादल नवजीवन लाने वाले होते हैं | उनका आगमन मृत प्राणियों में भी जीवन का संचार कर देता है और सूनी प्रकृति को भी हरी-भरी बना देता है |

5. चारों ओर व्याप्त फागुन के सौन्दर्य में आनंद का उन्माद है, खुशियों की अनंतता है | यही सौन्दर्य कवि को प्रफुल्लित कर रहा है | कवि का मानna है कि इस सौन्दर्य के दर्शन कर थके हुए लोगों में भी उत्साह का संचार होगा | कवि यही संदेश देना चाहता है कि निराश लोग नवजीवन के साथ प्रफुल्लता को अपनाए |

6. कवि बादलों से बरसने का अनुरोध इसलिए करता है क्योंकि सम्पूर्ण धरती का जन-जीवन भयंकर गर्मी के कारण अस्त-व्यस्त है | मनुष्य,पशु-पक्षी प्यास से व्याकुल है| पेड़-पौधे, नदी-तालाब सूख रहे हैं । कवि को धरती की तपन बुझानी है | बादलों के बरसने से धरती को शीतलता मिलेगी और मनुष्य परिवर्तन की ओर अग्रसर हो जाएंगे। उनको नव-जीवन एवं चेतना प्रदान करने करने के लिए कवि बादलों से बरसने का अनुरोध करता है।